Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 4 – Dec 2025 Impact Factor:7.665

JOURNAL OF EAST-WEST THOUGHT

UGC CARE I

ब्रज – इतिहास लेखन : श्रमण साहित्य के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. शिवानी शर्मा, सहायक प्रवक्ता
इतिहास विभाग, वर्धमान कॉलेज, बिजनौर

सार – संक्षेप

क्षेत्रीय इतिहास स्वयं में एक वृहद गौरवमयी परम्परा संजोया रहता है। आवश्यकता है तो उन अनउद्घाटित ऐतहासिक पृष्ठों को अनुसंधान के माध्यम से प्रकाशित करने की जो एक महान इतिहास का निर्माण करते हैं। ऐसे ही क्षेत्रीय अनुसन्धाननीय इतिहास ब्रज स्वयं में समेटे हुए हैं। विभिन्न पुरातात्विक, साहित्यिक साक्ष्य इस ब्रजभूमि की अनवरत ऐतिहासिक यात्रा को निनादित करते आ रहे हैं। इसी क्रम में श्रमण साहित्य जिनमें बौद्ध व जैन साहित्य मुख्य रूप से उल्लेखनीय है का योगदान भी ब्रज के इतिहास निर्माण में अभूतपूर्व व सराहनीय है।

बीज शब्द – ब्रज, श्रमण, निकाय, शूरसेन, वेरेंज, स्तूप

श्रमण ग्रंथों में बौद्ध और जैन साहित्य को रखा जाता है। जैन साहित्य, जिनमें अग, उपांग, गाथा तथा उनकी टिप्पणियां शामिल है। रोचक तथ्यों से ओत–प्रोत हैं लेकिन इस दृष्टिकोण से उसका अध्ययन नहीं किया गया, कारण जैन साहित्य की भाषा तथा अनुपलब्धता है। जैन ग्रंथों[1] के अध्ययन अध्यापन को जैन साधुओं तथा मान्यता तक सीमित किया गया। जैन साहित्य सूक्ष्मतम वर्णन देने में विश्वास करता है चाहे वो जिस भी विषय को लेकर लिखा गया हो विस्तारपूर्वक वर्णन अवश्य करता है। जैन साधु घुमंत थे तथा एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा[2] में वह तत्कालीन सामाजिक जीवन के भी वर्णन करते थे। व्यापारी वर्ग से विशेष सम्बन्धित यह धर्म विभिन्न स्थानों की महत्वपूर्ण भौगोलिक तथा सामाजिक जानकारियों से संतृप्त रहा।

जैन साहित्य में मथुरा को 'उत्तरमथुरा'[3] के नाम से अभिहित किया गया। यह उत्तरमथुरा शूरसेन प्रदेश की राजधानी थी, यह उत्तरभारत को 'अर्न्या' कहा गया, एक ऐसा प्रदेश जो जैन भिक्षुओं के प्रवास के लिए मान्य स्थान हो। निशीय सूत्र[4] के अनुसार मथुरा उन दस मुख्य नगरों में से एक था जहां राजाओं को अभिषिक्त किया जाता था। अन्य स्थानों में चम्पा, राजगृह, कौशाम्बी, मिथिला, कुरू आदि का नाम प्रमुख है।

साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि मथुरा में एक जैन स्तूप था जिसे कंकाली टीला स्तूप की संज्ञा दी जाती है। इस स्तूप को देवीनार्मित स्तूप के नाम से भी जाना जाता था। यहाँ से उत्खनन में प्रचुर मात्रा में जैन पुरातात्विक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। आवश्यक पूर्णि में मथुरा के

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 4 – Dec 2025 Impact Factor:7.665

लिए इन्द्रपुर[5] नाम प्रयुक्त किया गया है। ठाणाम सूत्र[6] में भी निशीय के समान मथुरा का नामोल्लेख किया गया है।

जैन ग्रन्थ मथुरा विषयक वर्णनों में पार्श्वनाथ तथा महावीर जो क्रमशः तेइसवें एवं चौबिसवें[7] तीर्थकर थे, की मथुरा यात्रा का वर्णन भी करते हैं।[8] जैन ग्रन्थ पाउमचरिय में वर्णित है कि सर्वप्रथम मथुरा में ही जैन श्वेताम्बर धर्म का प्रचार किया गया था, में जैन श्रमण संख्या में सात थे जो क्रमशः सुरमंग, श्रीमंग, श्रीतिलम्, सर्वसुन्दर, अनिल, ललित तथा जयमित्र थे।[9]

मथुरा को जैन ग्रन्थों में पाखण्डिगर्भ कहा गया है। जैन आचार्य आर्य रक्षित का विहार के क्रम में मथुरा के भूतगुहा में उनके विश्राम की व्यवस्था चैत्य का वर्णन भी जैन ग्रन्थ प्रदान करते हैं।[10]

सोमदेव सूरी ने दसवीं शताब्दी ई. में अपने ग्रंथ यशस्तिलक चम्पू में मथुरा का वर्णन प्रदान किया। यहाँ वो एक पौराणिक कथा का उल्लेख करते हैं। इस उल्लेखानुसार[11] मथुरा में राजा पुतिकावाहन के शासनकाल के समय सोमदत्त के पुत्र वज्र कुमार के लिए एक जैन स्तूप बनवाया गया था। ग्रंथ में उन्होंने मथुरा की इसी उर्मिला का उल्लेख किया है जो अष्टाहिकमहोत्सव में[12] प्रतिवर्ष रथ–यात्रा का आयोजन करवाती थी।

इसी प्रकार के एक अन्य जैन ग्रंथ विविध तीर्थ कल्प[13] जो जिन प्रभसूरि द्वारा रचित हैं। बारहवीं शताब्दी के बाद की रचना है विभिन्न कल्पों के साथ मथुरा का वर्णन विशद् रूप में किया है।

पालि साहित्य :

पालि बौद्ध ग्रंथ, बौद्ध सुत्त साहित्य में प्राथमिक स्त्रोत हैं। इस श्रेणी में 'मझिमनिकाय' का सुत्त तीन सुत्त 'अंगुत्तरनिकाय' से।

एक संदर्भ विमान वत्थु अट्ठकथा, जातक से एक संदर्भ प्राप्त है।

मिलिन्दपण्हो, दीपवंश, कुलवंश विनययपिटक के भी मथुरा की जानकारी के स्त्रोत हैं।

संस्कृत बौद्ध साहित्य :

मथुरा में बौद्ध धर्म के प्रसार को दिव्यावदान घोतित करता है। अवदान साहित्य में यह मथुरा से सम्बन्धित मथुरा में एक बौद्ध विाहर 'नाट–भट्ट विहार' का वर्णन करता है जो उपगुप्त से सम्बन्धित है। यह वर्णन क्षेमेन्द्र अवदान कल्पतला में भी पुनः वर्णित[14] है।

विनयवस्तु भी मथुरा का वर्णन प्रस्तुत करता है। यह बुद्ध की मथुरा यात्रा, विशाल धर्मान्तरण, बिहारों का निर्माण तथा राजवैद्य, 'जीवक' ने मथुरा में चिकित्सकीय भाग्य आजमाने का वर्णन है। यह वर्णन चिठवत्तु में प्राप्त होता है।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(*https://jetjournal.us/*)
Volume 15, Issue 4 – Dec 2025 Impact Factor:7.665

पालि साहित्य में मथुरा को 'उत्तर मथुरा' के नाम से अभिहित किया गया है। यहाँ यह कहना कठिन है कि यह भाषागत त्रुटि से हुआ अथक किसी अन्य स्थान इंगित करता है जबकि संस्कृत और चीनी साहित्य 'मथुरा' को लिखने में भाषागत त्रुटि नहीं करते है किन्तु पाली साहित्य अपभ्रंश जैसा प्रस्तुत करता है इसमें संशय नहीं है। यहां तक की जातक कथा उत्तर भारत और मथुरा उद्धृत करता है।

मिलिन्दपण्हों भी 'मथुरा' नाम से उल्लिखित करता है।[15] यह माना जा सकता है कि सिंहली लेखकों से दक्षिण के मदुरै से पृथक करने के लिए 'मथुरा' को 'उत्तर मथुरा' नाम से उल्लेख किया। यहां मुख्य बात यह है कि यह उत्तर मथुरा यमुना के पुलिन पर ही स्थित थी।

पाली साहित्य शूरसेन जनपद को सोलह महाजनपदों की सूची में वर्णित करता है साथ ही 'मथुरा' का उल्लेख करते हैं। जो इस जनपद के अन्तर्गत आता था।

अंगुत्तरनिकाय, यह ग्रंथ छठीं शताब्दी ई0पू0 के 'सोलह महाजनपदों की सूची उपलब्ध कराने के साथ तत्कालीन राजाओं के नाम भी उपलब्ध करवाता है। इस सूची में शूरसेन महाजनपद, राजधानी मथुरा व शासक अवन्तिपुत्र का वर्णन है।[16]

इस ग्रन्थ में वर्णित है कि एक समद बुद्ध मथुरा में एक वृक्ष के नीचे बैठे थे तब स्थानीय लोगों ने उनका पूजन–वन्दन[17] किया था। इसी प्रकार यह ग्रन्थ बताता है कि बुद्ध के शिष्य माकाश्यप (महाकच्चापन) की पत्नी भद्रा कपालिनी मथुरा की निवासिनी[18] थी।

यह ग्रंथ भगवान बुद्ध के मथुरा आगमन की पुष्टि उनके तत्कालीन मथुरा के वर्णन के आधार पर करता है। बुद्ध को तत्कालीन मथुरा में[19] कतिपय कठिनाईयाँ हुई जिनमें धूल भरी सड़के, भिक्षा न मिलना, खराब मार्ग, खानों की अधिकता, यक्षों की प्रचुरता, प्रमुख बातें थी–पंचिमें भिक्खवे, अदिनावा माधुरश्याम, कटामे परीखा, विसामा, बदुरेजा, चन्द्रा सुनाखा, वययक्खा, धूलभापिड़।

अन्य बौद्ध ग्रन्थ जनपद शूरसेन के राजा सुबाहु[20] का उल्लेख करता है इस ग्रन्थ में इस प्रदेश को वैभवशाली और धनी आबादी वाला वर्णित किया गया है। सुबाहु को कंस का वंशज कहा गया। दिव्यावदान में मथुरा सम्बन्धी रोचक तथ्य प्राप्त होते हैं। यह अवदान उपगुप्त के विषय में जानकारी प्रदान करता है। जहाँ वर्णित है कि बुद्ध से शूरसेन विहार के समय आनन्द को 'उरूमुण्ड'[21] पर्वत जो गहरे नीले रंग का था, की दिखाते हुए कहा था कि यहाँ मेरे परिनिर्वाण के सौ वर्ष पश्चात एक गन्धिक यहाँ से दीक्षा लेकर बौद्ध धर्म का प्रचार करेगा। इसी प्रकार दो व्यापारी भार्य नट और भट्ट के बारे में भी बताते हुए बुद्ध ने कहा कि यह भाई यहाँ नाटभट्ट विहार की स्थापना करेगें।[22]

कालान्तर इन उपगुप्त की ख्याति मथुरा की वैभवशाली गणिका वासवदत्ता तक ख्याति पहुँच गई जिसका एक रात्री का मूल्य 500 स्वर्ण मुद्रा थी। इन उपगुप्त पर आसक्त हो गई तथा प्रणय का आग्रह करती रही जिसे उपगुप्त द्वारा बारम्बार अस्वीकृत किया। अन्ततोगत्वा

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

एक भयानक घटना के साथ जब वासबदत्ता के हाथ, कान व नासिका को दण्ड स्वरूप भवन कर दिया गया, तब उपगुप्त ने जाकर उससे कहा कि 'ये सही समय है हमारे मिलने का' तथा उसे बुद्ध धम्म व संघ की दीक्षा दी।

मृत्यु से पूर्व यह मथुरा भी गणिका भिक्षुणी की व इन्हीं उपगुप्त के प्रभाव से इस वासवदत्ता के भगवानों की मथुरा में पूजा की जाने लगी।[23]

विमानवत्थु नामक बौद्ध ग्रन्थ में भी मथुरा सम्बन्धी वर्णन है जिसमें ब्रज, मथुरा आदि को 'उत्तर मथुरा' कहकर उद्घृत किया गया है। इस ग्रन्थ के अनुसार मथुरा की स्त्री ने बुद्ध को भिक्षा दी थी।[24] पेतवत्थु में देवगम्भा (देवकी) के दस पुत्रों का वर्णन किया गया है। इन दस पुत्रों द्वारा अतिसंजना (महाकंस की नगरी कंस) से द्वारावती तक का प्रदेश विजित किया गया था। देवगब्भा का विवाह 'उत्तर मथुरा' के उपसागर से बताया गया है। घट जातक में भी इसी प्रकार का वर्णन प्राप्त होता है जो पुराणों के वर्णन से भिन्न तो है किन्तु उसकी सभ्यता के आधार पर वह कृष्ण व मथुरा[25] का वर्णन भदानित सिद्ध होता है।

मज्सिमनिकाय

जिन महत्वपूर्ण तथ्यों का वर्णन करता है उनमें प्रथमतः प्रमुख है भगवान बुद्ध के मथुरा आगमन पुष्टि। इस संदर्भ में छठीं शताब्दी ई0पू0 में शूरसेन जनपद के राजा अवन्तिपुत्र तथा महाकच्चायन (महाकश्यप) की भेंट मथुरा के गुंदवन[26] नामक स्थान पर हुई थी तथा पारस्परिक वार्ता में उन्होंने जातिगत वैमनस्य की भर्त्सना की एवं इसे कुत्सित कर्म की संज्ञा दी।

मज्झिमानिकाय का माधुर्य सुत्तत इस भेंट का उल्लेख करता है।[27]

महावस्तु में बुद्ध द्वारा धर्म प्रचार के क्रम में विभिन्न क्षेत्रों यथा अंग, मगध, वज्जि, मल्ल, काशी, कौशल के साथ शूरसेन जनपद का भी नामोल्लेख किया गया है।[28] भगवान बुद्ध की ब्रज यात्रा से सम्बन्धित यह महत्वपूर्ण दस्तावेज वर्णित करता है कि बुद्ध ने महत्वपूर्ण स्थानों पर ज्ञान का प्रचार–प्रसार किया, इन स्थानों में अंग, मगध, वज्जि, मल्ल, काशी, कौशल तथा शूरसेन का नामोल्लेख भी किया गया। इस बौद्ध ग्रन्थ में मथुरा में एक धनी सेठ की कन्या का विस्तारपूर्वक वर्णन भी है।[29]

दीपवंश

ग्रन्थ में 'मथुरा' की अत्याधिक प्रशंसा की गई। ग्रन्थानुसार यह 'मथुरा' एक उत्कृष्ट नगर वाला एक बड़े साम्राज्य की राजधानी था।[30] विनयपिटक में वेरंज के भीषण अकाल का वर्णन किया गया है जब भगवान बुद्ध उस स्थान की यात्रा करते हैं। वर्णन के अनुसार इस अकाल के समय उत्तराथ से 500 अश्व व्यापारी मथुरा आते हैं तथा कुछ समय तक बौद्ध भिक्षुओं और बुद्ध को भी 'पथ्थ' प्रदान करते हैं जो उबला हुआ अन्न चाहता था।[31]

सुत्तों के अनुसार बुद्ध का यह वर्णन अवश्य है कि बुद्ध मथुरा व वेरंज के राजमार्ग से गुजरे थे।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 4 – Dec 2025 Impact Factor:7.665

JOURNAL OF EAST-WEST THOUGHT

UGC CARE I

वेरंज में एक 'नलेयरूनिम्मा'[32] नामक एक वृक्ष की चर्चा सुत्तों में बारम्बार अपने धार्मिक महत्व के कारण हुई है।

यह वृक्ष राजमार्ग पर अवस्थित[33] था। इस वृक्ष का धार्मिक महत्व 'नलेरू' यक्ष के नाम पर है यह सर्वविदित है कि प्राचीन मथुरा में यक्ष पूजन प्रचलित था।

मथुरा व वेरंज के ब्राह्मणों का वर्णन भी प्राप्त होता है। मथुरा के कन्दरायण नामक ब्राह्मण का नाम बौद्ध ग्रन्थ में प्राप्त होता है।

यह ब्राह्मणोंल्लेख बुद्ध द्वारा ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठता के मापदण्डों को सिरे से अस्वीकार करने के सन्दर्भों में किया गया है। बुद्ध वर्ण–व्यवस्था को अस्वीकार करते थे।

सन्दर्भ सूची

1 Moti Chandra : Trade Routes in Ancient India P. 158

2 Op. cited.

3 Jain Jagdish Chandra : Life in Ancient India (As Dipicted in the Jain (ohoh) P.250-51, Bombay, 1947

4 निशीथ सूत्र, 9/19

5 आवश्यक चूर्णि

6 ठाणांग सूत्र, 10/718

7 विपाकसूत्र, पृ.26

8 नायाधम्मकथाओं, पृ.158

9 पाउमचरिय 212/89

10 आवश्यक चूर्णि, भाग–I, पृ.411

11 यशस्तिलक चम्पू, पृ.416–17 (म.क.है.)

12 –वही–

13 विविध तीर्थ कल्प, पृ.17, वही

14 इस विहार का नामकरण नाट और भट्ट के द्वारा स्थापित होने के कारण यह 'नाट भट्ट' किया गया।

15 मिलिन्दपण्हो, पृ.331

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 4 – Dec 2025 Impact Factor:7.665

16 अंगुत्तरनिकाय, 1, 213, 14, 252–56

17 अंगुत्तरनिकाय, (कावेल), भाग II, पृ.57

18 –वही–

19 अंगुत्तरनिकाय II, पृ.256

20 ललित विस्तर, पृ.21

21 दिव्यावदान, पृ.217

22 दिव्यावदान, पृ.226

23 दिव्यावदान, पृ.228

24 विमानवत्थु, (भाष्य पृ. 118–119)

25 जातक, (कावेल सं. भाग IV, पृ.50 से आगे)

26 मझिमनिकाय, II, पृ.83

27 मझिमनिकाय, (कावेल) भाग–II, पृ.83

28 महावस्तु (लाहा सं., पृ.9)

29 महावस्तु, बी.सी. लाहा का सं.पृ.160

30 दीपवंश, (ओल्डनबर्ग द्वारा सम्पादित, पृ.17)

31 Horwer, Discipline, P. 12, 2

32 अंगुत्तरनिकाय II, पृ.57

33 अंगुत्तरनिकाय I, पृ.67

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved